सम्पादक के नाम

मोदी की मौका परस्ती का दंश झेल रहा हिन्दुस्थान

आज से ठीक 5 साल पहले नरेन्द्र मोदी ने बीजेपी को धमकी देकर अपने को पीएम पद का उम्मीदवार घोषित करवाया था। उस संघर्ष में भाजपा पर कब्जा जमाने के लिए आडवाणी व मोदी के बीच एक युद्ध छिड़ा था। सुलह समझौता राजनाथ सिंह ने करवाया था, नितिन गड़करी ने भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की थी।

लालकृष्ण आडवाणी जो कि भाजपा की सबसे वरिष्ठतम सदस्य हैं, उन्होंने भाजपा के सामने यह शर्त रखी कि उन्हें प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार बनाएं लेकिन नरेंद्र मोदी बिगड़ गए। नरेंद्र मोदी ने सीधी धमकी दे डाली कि प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार उन्हें ही बनाया जाए और पूरे लोकसभा चुनाव मे अबानी अडानी से खर्च करवायेंगे और मीडिया मैनेजमेंट भी वही करेंगे।

खबर जैसे ही दिल्ली पहुंची आनन-फानन में भाजपा हाईकमान की मीटिंग हुई। नरेंद्र मोदी और आडवाणी दोनों के बीच सुलह करवाने का प्रयास हुआ और अंत में यह निर्णय लिया गया कि चुनाव लड़ने के लिए धन की व्यवस्था जो भी करेगा पार्टी उसे ही प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार बनाएगी। अपने गुजरात शासन के दौरान नरेंद्र मोदी की मित्रता कुछ बड़े उद्योगपतियों के साथ थी , जबकि आडवाणी के साथ यह सुविधा नहीं थी ।

पूंजीपतियों ने भाजपा के सामने शर्त रख दी कि भाजपा को तभी धन उपलब्ध करवाएंगे यदि नरेंद्र मोदी को प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार पार्टी घोषित कर दे। भाजपा को पूंजीपतियों के दबाव के आगे झुकना पड़ा और नरेंद्र मोदी को प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार बनाना पड़ा। आडवाणी नाराज होकर कोप भवन में बैठ गए।

उसके बाद लोकसभा चुनाव प्रचार के दौरान मुकेश अंबानी ने देश में 22 चैनल खरीदे। इन चैनल्स को यह निर्देश था कि वे दिन रात मोदी का प्रचार करें, उनकी रैलियों के भाषण लाइव टेलीकास्ट करें और समस्त विरोधी नेता यानी आज के विपक्षी नेताओं मायावती, मुलायम, लालू, ममता, अखिलेश, केजरीवाल, राहुल गांधी, सोनिया गांधी, मनमोहन सिंह समेत तमाम नेताओं पर तंज कसने के लिए कहा गया। मीडिया ने यह काम बखूबी किया भी। तकरीबन 600 वेबसाइटों को मुकेश अंबानी ने खरीदा। नरेंद्र मोदी ने 400 रैलियां की थीं। इन रैलियों का खर्चा उनके 67 पूंजीपति मित्रों के द्वारा उठाया गया।

नरेंद्र मोदी को चुनाव प्रचार करने के लिए एक चार्टर प्लेन और एक हेलीकॉप्टर दिया गया था, यह हेलीकॉप्टर चुनाव प्रचार के लिए अडानी ने दिया था। जैसे ही परिस्थितियां थोड़ी सी बदलीं, देश के प्रधानमंत्री मोदी बन गए उसके बाद सिलसिला शुरु हुआ कर्ज उतारने का।

गौतम अडानी को ऑस्ट्रेलिया के क्वींसलैंड शहर में खनन के लिए 6000 करोड़ का कर्ज नरेंद्र मोदी ने दिलवाया उनके पिछले 67000 करोड़ के कर्ज़ माफ कर दिए गए।

मुकेश अंबानी को फ्री में 4 प्रतिशत स्पेक्ट्रम दिए गए, इसके अलावा मुकेश अंबानी की कंपनी पर पिछली सरकार द्वारा लगाया गया जुर्माना माफ कर दिया गया, उनके भी कुछ कर्जों को राइट ऑफ कर दिया गया। दैनिक जागरण अखबार ने लोकसभा सभा प्रचार के दौरान नरेंद्र मोदी का बखूबी साथ दिया था, इसलिए इस अखबार के मालिक को मोदी ने राज्यसभा का सांसद बना दिया ।

दैनिक भास्कर अखबार जिसकी मालिक वेदांता कंपनी है, उसको मोदी ने छत्तीसगढ़ में कोयले की खदान दिलवा दी । जी न्यूज जिसने दिन-रात नरेंद्र मोदी का प्रचार किया और आज भी कर रहा है, उसके मालिक सुभाष चंद्रा को बीजेपी ने राज्यसभा सांसद बना दिया!

अब आप समझ गये होगे कि कैसे सुनियोजित ढंग से मोदी ने देश पर हुकूमत पर कब्जा किया था और मीडिया में जो दिन रात आपको जो दिखाता है वह सिर्फ मोदी और उनकी पार्टी का प्रचार मात्र है।

आज जरूरत है पाखंडी मीडिया पर लगाम लगाने की जिससे मोदी का काल्पनिक विकास का किला धराशायी हो सके और मोदी के इस तिलस्मी को 2019 चुनावो में ज़मीदोज़ कर वीरान गुफा से बाहर आकर भारत को सूर्यदय की रौशनी से सरोबर करना होगा।

- एम ए खान

इस पोस्ट को लिखते हुए मैं शर्मिंदा हूँ ! (अश्लील शब्दों के प्रयोग करने पर)

"वीरे दी वेडिंग" चार लड़कियों की कहानी हैं जिन्हें बारहवीं कक्षा की परीक्षा सम्पन्न होने की खुशी में घरवाले घर में शराब पार्टी अरेंज करके देते हैं।

पहली लड़की विवाह से पूर्व अपने बॉस से सेक्स सम्बन्ध बनाती है। यह लड़की अपनी सहेलियों के कहने पर अपने मंगेतर को भरी महफिल में किस करने की कोशिश करती है और जब मंगेतर इस पर ऐतराज करता है तो सरे-आम उसको माँ की गाली देती है। यही लड़की अपनी सहेली की शादी के बीच से निकल कर एक ऐसे लड़के के साथ जाकर सो जाती है जिसका वह नाम भी नहीं जानती।

दूसरी लड़की का पति उसे हस्त-मैथुन करते हुए पकड़ लेता है। वह लड़की अपने पति को छोड़कर अपने पिता के घर लौट आती है। यह लड़की अपनी सहेली को इस बात पर ताना देती है कि वह किसी से सेक्स किये बिना शादी कैसे कर सकती है। यह लड़की अपने पिता को बताती है कि उसके पति ने उसे क्यों छोड़ दिया तो उसका पिता उसे कहता है "मुझे पहले बताना था, तेरे पति को तो मैं लटका दूँगा।"

तीसरी लड़की अपनी सहेली को बताती है कि टेस्ट ड्राइव किये बिना तो मैं गाड़ी भी न लूँ फिर तू पति कैसे ले सकती है।

चौथी लड़की अपने प्रेमी से इस बात पर आश्चर्य जताती है कि जब हम दो साल से साथ रह रहे हैं तो फिर तू शादी क्यों करना चाहता है!

ये चारों लड़कियां बेहद सभ्य परिवारों से आती हैं इसलिए "फिल्म" की स्क्रिप्ट की तथाकथित डिमांड पर" हिंदी भाषा के कुछ अश्लील शब्द जिन्हें हम गाली कहते हैं उनको बीप कर दिया गया है। लेकिन इन्हीं लड़कियों ने फिल्म में कुछ अंग्रेजी की शब्दावली का प्रयोग भी किया है। अंग्रेजी वह पतित पावनी है जिसमें नहाकर अश्लीलता भी स्टेटस सिंबल बन जाती है। इसीलिए पूरी फिल्म में बार बार FUCK, ASS, SHIT जैसे पवित्र शब्दों को सेंसर ने स्वीकार कर लिया।

"मेरी लेले"; "तेरी लेने के लिए डिग्री भी चाहिए"; "उसे अपनी तीसहजारी दिखा दे"; "चढ़ जा"; "तूने बॉस को ठोक दिया"; "अपना हाथ जगन्नाथ"; ओ हेलो, हमारा भी ले लो"और "मेरी फटी पड़ी है" जैसे संवाद इन चारों लड़कियों के मुँह से उचर कर फिल्म की और स्त्री अस्मिता की शोभा बढ़ा रहे हैं।

जब-जब इन भौंडे संवादों और अश्लील इशारों पर सिनेमा हॉल में सीटियां गूंजी तब-तब मुझे नारी सशक्तिकरण के अभियान अपने मुँह पर कालिख पोते खड़े दिखाई दिए। जब जब फिल्म में सोनम कपूर पर उसकी सहेलियों ने अश्लील कमेंट किये तब तब लड़की को घूरने पर भी उसे प्रताड़ना मानने वाला कानून और अधिक अंधा प्रतीत हुआ। जब स्वरा भास्कर के हस्तमैथुन दृश्य पर सिनेमा हॉल का अंधेरा सिसकारियों से भर गया तब तब मुझे "नारी-सम्मान" के नारे लूले नज़र आने लगे।

कानून कहता है कि किसी स्त्री को अश्लील इशारे करना या उसे अश्लील सामग्री दिखाना अपराध है। लेकिन फ़िल्म की चारों अबला नारियाँ फुकेट में नंगे नाच देखने जाएँ तो यह बोल्डनेस है।

इस फिल्म में प्रदर्शित लड़कियां समाज के जिस चेहरे का चित्र उतार रही हैं उसे देखकर कानून, मर्यादा, समाज और संस्कृति के परदों के पीछे जारी सभ्यता के इस भौंडे नाटक का यवनिका पतन हो जाएगा।

- लीना जैन

इस बार एक डॉक्टर लड़की गुम है

गिरीश की इंदौर से विशेष रिपोर्ट

इंदौर के निजी मेडिकल कॉलेज में पढ़ने वाली डॉ स्मृति लहरपुरे का सुसाइड नोट देखने में आया कोई बड़ा पेपर यह सुसाइड नोट छाप नही रह है, पुलिस कॉलेज के दबाव में है, भय्यू महाराज की छोटी छोटी बातों को ढूंढ ढूंढ़ कर निकाला जा रहा है लेकिन मेडिकल कॉलेज की छात्रा की मौत पर किसी तरह का विमर्श देखने मे नही आता, पढिए क्या लिखा है सुसाइड नोट में.....

मुझे माफ कर देना मम्मी, स्वामी और सूर्या, मै डॉ स्मृति लहरपुरे पूरे होश हवास में लिख रही हूं न ही कभी मैने कोई नशे या दवाई का सेवन ही किया है। सबसे पहले मै अपनी माँ और भाईयों से माफी चाहती हूं कि मैं ऐसा कदम उठा रही हूं क्योंकि तुम तीनों ने हर विपरीत परिस्थितियों में मेरा साथ दिया, मै इन लोगों से और नहीं लड़ सकती इसलिए मुझे माफ कर देना।

मेरी मौत के लिए सीधे तौर पर इंडेक्स कॉलेज के चैयरमैन भदौरिया और उनके कॉलेज का मैनेजमेंट है, इनमें मुख्यरूप से डॉ के के खान हैं क्योंकि इन दोनों के द्वारा मुझे लगातार प्रताड़ित किया जा रहा था। मैने जून 2017 में नीट परीक्षा के माध्यम से ज्वाइन किया था। काउंस्लिंग के दौरान मुझे जो फीस बताई गई थी उसके अनुसार टयूशन फीस 8 लाख 55 हजार और होस्टल फीस 2 लाख थी।

इसके बाद जब मैं कॉलेज में ज्वाइन करने आई तो इंडेक्स कॉलेज प्रबंधन ने मुझसे कॉशनमनी और एक्सट्रा करिकुलर एक्टीविटी के नाम पर फिर 2 लाख मांगे। चूंकि मैं मध्यमवर्गीय परिवार से हूं इसलिए अतिरिक्त फीस नहीं चुका सकती थी लेकिन नीट परीक्षा के बाद बामुश्किल मिला पीजी करने का यह अवसर हाथ से न निकल जाए इसलिए मैने 2 लाख का फिर लोन लिया, इसके बाद जैसे ही मैं ज्वाइन करने पहुंची कॉलेज प्रबंधन ने फिर दो लाख मांग लिए। इसके बाद रातभर के प्रयास के बाद मैने अपनी सीट खोने के डर से मैने यह व्यवस्था भी की। लेकिन कॉलेज ने टयूशन फीस 8 लाख 55 हजार से 9 लाख 90 हजार कर दी।

और सभी छात्रों से यह फीस जमा करने को बोला जाहिर से अचानक एक लाख 35 हजार की फीसवृद्धि सहन करना हर किसी के लिए मुश्किल था इसलिए हम सभी लोग इसके खिलाफ जबलपुर हाईकोर्ट गए। इसके बाद कॉलेज प्रबंधन ने मुझे व्यक्तिगत तौर पर प्रताड़ित करना शुरु कर दिया इसके अलावा फोन पर भी मुझे यह केस वापस लेने के लिए धमकाया जाने लगा। इसके बाद कोर्ट ने इंडेंक्स कॉलेज को निर्धारित फीस लेने का आदेश दिया।

लेकिन इसके बाद फिर अगले साल 2017 में फिर 9 लाख 90 हजार मांगने लगे जो मैने जमा नहीं कर कोर्ट के आदेशानुसार 8 लाख 55 हजार ही जमा किए, इस मामले में कोर्ट जाने पर कॉलेज प्रबंधन हमे लगातार प्रताड़ित करने लगा खासकर एचओडी डॉ खान, इसके बाद इसी मामले में केस वापस लेने की शर्त पर एचओडी डॉ खान ने अमानवीय व्यवहार करते हुए सार्वजनिक तौर पर हमे 2 से 3 महीने तक ओटी और डिपार्टमेंट से बाहर निकाले रखा। इसके बाद हमारा स्टायफंड भी काट लिया गया और बिना कारण हमपर हजारों रुपए का फाइन लगाया जाने लगा। कॉलेज प्रबंधन हमे इस समय का स्टायफंड कभी नहीं देना यदि कॉलेज में उस दौरान मेडीकल काउंसिल का दौरा और इनकम टैक्स का छापा नहीं पड़ता।

मेरी एचओडी के के खान मुझे व्यक्तिगत तौर पर प्रताड़ित करती थी वह यह सोचती थी कोर्ट केस करने में मेरी सक्रीय भूमिका है। दरअसल वह मानसिक रूप से बीमार है इसलिए वह सायकिक रोग का इलाज भी करवा रही है। वह मेडीकल कॉलेज के इस प्रोफेशन के लिए फिट नहीं है खासकर एनेस्थेटिक ब्रांच के लिए। वह हर किसी को प्रताड़ित करती है पर मैं नहीं जानती कि उसे मुझसे क्या प्राव्लम रहती थी वह मेरे लीव एप्लीकेशन पर साइन नहीं करती थी और मेरे लीव पर होने पर एचआर विभाग से मुझपर हजारों रुपए का फाइन लगवाती थी। हम पीसी स्टूडेंट होने के बावजूद भी यहां प्रताड़ित हो रहे हैं हमारा ड्यूटी टाइम सुबह 8 बजे से रात 8 बजे तक है, इसके बावजूद दिन में चार बार एटेंडेंस के लिए पंच करना पड़ता है, हद तो यह है कि एक दिन की लीव पर एचओडी डॉ खान ने मुझपर 4500 से 6000 रुपए का फाइन लगाया, जिसपर पहले से ही भारी लोन हो उसके लिए यह राशि भर पाना संभव नही था।

कुछ दिनो पहले मैने थर्ड ईयर की फीस जमा करने को बोला तो फिर फीस 9 लाख 90 हजार कर दी गई जिसे जमा करने से मैने मना कर दिया। इस बारे में मैने डॉ अमोलकर को भी बताया था, इसके बाद चैयरमैन भदौरिया ने मैनेजमेंट को उन सभी छात्रों से बकाया फीस वसूलने का आदेश दिया जिन्होंने कोर्ट के निर्देशानुसार फीस जमा की थी यह राशि तीन साल की प्रति छात्र चार लाख 5 हजार थी और किसी भी हालत में मैं बढ़ी हुई फीस जमा नहीं कर सकती थी। मेरे माता पिता पहले से ही बढ़ी हुई फीस के लिए रिश्तेदारों और दोस्तों से रुपए उधार ले चुके थे जिनके बस में यह राशि जमा करना संभव नहीं था।

मेरी उम्र में अन्य इंजीनियरिंग लॉ और आर्ट सब्जेक्ट इतना कमा लेते हैं कि अपना खर्चा उठा सकें जबकि मैं सिर्फ अपने घरवालों पर ही निर्भर हूं, वह भी इसलिए कि मैं एक डॉक्टर हूं। मैने स्कॉलर और स्कूलिंग रेपुटेड कॉलेज गांधी मेडीकल कॉलेज और सेंट्रल स्कूल से की है मैने इंडेक्स कॉलेज जैसा फर्जी संस्थान पहले कभी नहीं देखा था। यहां कोई इंफ्रास्ट्रक्चर और व्यवस्था डॉक्टरों और मरीजों के परिजनों के लिए नहीं है। इन्होंने अभी भी रिश्वत और धमकी देकर एमसीआई की मान्यता हासिल की है। मान्यता के दौरान मैने खुद इनके कंसलटेंट के फर्जी दस्तावेज और फर्जी साइन देखे हैं। ये लोग सिर्फ पीजी स्टूडेंट को प्रताड़ित करने में लगे हैं और खुद की नाकामी का आरोप हमपर लगाकर फीस बढ़ाते हैं और आए दिन हमारा स्टायफंड काटते रहते हैं।

आधी रात को इनके इशारे पर शराब पीकर कुछ लोग स्टूडेंट के पास भेजे जाते हैं और लोग हमसे कोरे कागज पर साइन मांगते हैं। जो पीजी स्टूडेंट साइन करने से मना कर देता है उसपर अगले दिन मेडीकल सुप्रीटेंडेंट बिना कारण के हजारों रुपए का फाइन लगा देता है। यह असहनीय है मैं इतनी प्रताड़ना और लूट सहते हुए इतने दबाव में काम और पढ़ाई नहीं कर सकती। इसलिए मैने इससे मुक्त होने का निर्णय लिया है मैं हमेशा इन लोगों से नहीं लड़ सकती।

मैं जानती हूं मै भदौरिया के सामने बहुत छोटी हूं पर मैं अपने माता पिता और परिवार को कर्ज और लोन के बोझ तले नहीं देखना चाहती। मेरी एक ही अंतिम इच्छा है कि भदौरिया को इसके बदले में सजा मिलनी चाहिए और मेरे परिवार को मेरी पूरी फीस लौटाई जाना चाहिए। और मेरे साथ पढ़ने वाले पीजी स्टूडेंट से विनती है कि आखिर तक इकट्ठे रहकर एक दूसरे की मदद करते रहें। प्लीज इस कॉलेज को बंद करो जहां मरीजों की जिंदगी और कॉलेज स्टूडेंट के करियर का विनाश किया जाता हो।

यह पत्र हिला देता है। कहीं भी कोई सुनवाई नही होती। निजी मेडिकल कॉलेज में जिस तरह की लूट मची हुई हैं उसका कोई मुकाबला ही नहीं। एक मध्यवर्गीय व्यक्ति अपने बच्चे को डॉक्टर बनाने के सिर्फ सपने देख सकता है उसे पूरा नही कर सकता, पुलिस पूरी तरह से कॉलेज के दबाव में आकर केस को दबाने में लगी है।

बड़े बावरे हिन्दी के मुहावरे

हिंदी के मुहावरे, बड़े ही बावरे हैं,
खाने पीने की चीजों से भरे हैं...
कहीं पर फल है तो कहीं आटा-दालें हैं,
कहीं पर मिठाई है, कहीं पर मसाले हैं।
फलों की ही बात ले लो...
आम के आम और गुठलियों के भी दाम मिलते हैं,
कभी अंगूर खट्टे हैं,
कभी खरबूजे, खरबूजे को देख कर रंग बदलते हैं।
कहीं दाल में काला है,
तो कहीं किसी की दाल ही नहीं गलती।
कोई डेड़ चावल की खिचड़ी पकाता है,
तो कोई लोहे के चने चबाता है,
कोई घर बैठा रोटियां तोड़ता है,
कोई दाल भात में मूसरचंद बन जाता है,
मुफलिसी में जब आटा गीला होता है,
तो आटे दाल का भाव मालूम पड़ जाता है।
सफलता के लिए बेलने पड़ते है कई पापड़,
आटे में नमक तो जाता है चल,
पर गेंहू के साथ, घुन भी पिस जाता है,
अपना हाल तो बेहाल है, ये मुंह और मसूर की दाल है,
गुड़ खाते हैं और गुलगुले से परहेज करते हैं,
और कभी गुड़ का गोबर कर बैठते हैं।
कभी तिल का ताड़, कभी राई का पहाड़ बनता है,
कभी ऊँट के मुंह में जीरा है,
कभी कोई जले पर नमक छिड़कता है,
किसी के दांत दूध के हैं,
तो कई दूध के धुले हैं7
कोई जामुन के रंग सी चमड़ी पा के रोई है,
तो किसी की चमड़ी जैसे मैदे की लोई है,
किसी को छटी का दूध याद आ जाता है,
दूध का जला छाछ को भी फूंक फूंक पीता है,
और दूध का दूध और पानी का पानी हो जाता है।
शादी बूरे के लड्डू हैं, जिसने खाए वो भी पछताए,
और जिसने नहीं खाए, वो भी पछताते हैं,
पर शादी की बात सुन, मन में लड्डू फूटते हैं,
और शादी के बाद, दोनों हाथों में लड्डू आते हैं।
कोई जलेबी की तरह सीधा है, कोई टेढ़ी खीर है,
किसी के मुंह में घी शक्कर है, सबकी अपनी अपनी
तकदीर है...
कभी कोई चाय-पानी करवाता है,
कोई मखखन लगाता है
और जब छप्पर फाड़ कर कुछ मिलता है,
तो सभी के मुंह में पानी आता है,
भाई साहब अब कुछ भी हो,
घी तो खिचड़ी में ही जाता है,
जितने मुंह है, उतनी बातें हैं,
सब अपनी-अपनी बीन बजाते हैं,
पर नक्कारखाने में तूती की आवाज कौन सुनता है,
सभी बहरे हैं, बावरें हैं
ये सब हिंदी के मुहावरें हैं...